SYLLABUS

Subject – Hindi

Unit	Contents
UNIT – I	भारतीय ज्ञान परम्परा एक परिचय
	भारतीय ज्ञान परम्परा और हिन्दी भाषा
	क्रियाकल्प – अशुद्धि संशोधन
UNIT – II	मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठः मातृभूमि (कविता)
	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला परिचय पाठ भारत वंदना (कविता)
	प्रेमचन्दः परिचय पाठः शतरज के खिलाड़ी (कहानी)
	हिन्दी के प्रमुख विराम चिन्ह
UNIT – III	वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम
	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचयपाठ: उत्साह (भावमूलक निबन्ध)
	रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठ: भारत एक है (संस्कृति)
	शरद जोशी परिचय पाठ अफसर (व्यंग्य)
UNIT – IV	शब्द रचना : उपसर्ग एवं प्रत्यय
	शब्द प्रकार : तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, संकर, नव निर्मित
	पर्यायवाची, विलोमार्थी, अनेक शब्दो के लिए एक शब्द
UNIT – V	संक्षेपण
	बीज शब्द– धर्म, अद्वैत, भाषा, अवधारणा

Unit -1

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र ज्ञान प्रणाली है जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों, शास्त्रों और लोक साहित्य से प्राप्त ज्ञान को समाहित करती है. यह केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों तक सीमित न रहकर, सामाजिक, नैतिक, और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करती है. इसका उद्देश्य मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक पहलुओं का सर्वांगीण विकास करना है, जिससे व्यक्ति को 'अभ्युदय निःश्रेयस' (लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति) प्राप्त हो सके

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिंदी भाषा का उद्भव वैदिक संस्कृत की वाचिक परंपरा से जुड़ा है, जहाँ वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों का मौखिक रूप से संरक्षण हुआ। उस समय ज्ञान को श्रुति परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से यह मौखिक ज्ञान आगे बढ़ता रहा और समाज में ज्ञान का प्रसार होता रहा। समय के साथ संस्कृत से सरल भाषाओं की ओर संक्रमण हुआ। प्राकृत, पाली और अर्द्धमागधी भाषाओं ने ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने में सहायता की। बौद्ध और जैन धर्मों के प्रचार में इन भाषाओं का विशेष योगदान रहा। इनसे अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जो हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप का आधार बनीं। वाचिक परंपरा में इन भाषाओं ने जनता के बीच भक्ति, ज्ञान और दर्शन को सरलता से पहुँचाया।

हिंदी का लिखित विकास 10वीं से 12वीं शताब्दी के अपभ्रंश साहित्य से हुआ। अमीर खुसरो ने हिन्दवी में रचनाएँ कर हिंदी के लिखित रूप को प्रारंभिक पहचान दी। भक्तिकाल (14वीं-17वीं सदी) में तुलसीदास, सूरदास और कबीर ने अवधी, ब्रज और खड़ी बोली में काव्य रचनाएँ कीं, जिससे हिंदी का व्यापक प्रसार हुआ। रीतिकाल में हिंदी साहित्य में श्रृंगारिकता प्रमुख रही। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद ने हिंदी को सामाजिक सुधार, यथार्थवाद और राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने जनजागरण का कार्य किया। आज हिंदी साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और मीडिया की एक सशक्त भाषा है। इस प्रकार हिंदी भाषा भारतीय अस्मिता और ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर है।

renaissance

Unit - 2

मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय

जीवन परिचय :- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी जिले के **चिरगांव नामक** स्थान पर **1886 ई.** में हुआ था। इनके पिता जी का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम काशीबाई था। इनके पिता को हिंदी साहित्य से विशेष प्रेम था, गुप्त जी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पड़ा। इनकी प्राथमिक शिक्षा चिरगांव तथा माध्यमिक शिक्षा मैकडोनल हाईस्कूल (झांसी) से हुई। घर पर ही अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत एवं हिंदी का अध्ययन करने वाली गुप्त जी की प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले **वैश्योपकारक** नामक पत्र में छपती थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आने पर उनके आदेश, उपदेश एवं स्नेहमय परामर्श से इनके काम में पर्याप्त निखार आया। भारत सरकार ने इन्हें **पदमभूषण** से सम्मानित किया। **12 दिसंबर 1964** को मां भारती का सच्चा सपूत सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया

साहित्यिक परिचय :- गुप्ता जी ने खड़ी बोली के स्वरूप के निर्धारण एवं विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्ता जी की प्रारंभिक रचनाओं में इतिवृत्त कथन की अधिकता है। किंतु बाद की रचनाओं में लाक्षणिक वैचित्र्य एवं सुक्ष्म मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में प्रबंध के अंदर गीतिकाव्य का समावेश कर उन्हें उत्कृष्टता प्रदान की है। गुप्ता जी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं उनमें देव एवं दानव नहीं है। इनके राम,कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किए हुए पात्र हैं। इसलिए वे जीवन पर ना और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी तुलसी की भांति आराध्य नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं

कृतियां (रचनाएं) :- गुप्तजी ने लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों में भारत भारती (1912), रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया आदि उल्लेखनीय हैं।

renaissance

भारत भारती मे हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जगाई। **रामचरितमानस** के पश्चात हिंदी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण **साकेत** है। **यशोधरा** और **साकेत** मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य की रचना की।

भाषा शैली :- हिंदी साहित्य में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान है। गुप्त जी की भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का सुंदर अद्भुत है।
वे गंभीर विषयों को भी सुंदर और सरल शब्दों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। इनकी भाषा में लोकोक्तियां एवं मुहावरे को के प्रयोग से जीवंतता आ गई है। गुप्तजी मूलत: प्रबन्धकार थे, लेकिन प्रबंध के साथ-साथ मुक्तक, गीति, गीतिनाट्य, नाटक आदि क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक सफलताएं की हैं। इनकी रचना **पत्रावली** पत्र शैली में रचित नूतन काव्य शैली का नमूना है। इनकी शैली में गेयता, प्रवाहमयता एवं संगीतत्मकता विद्यमान है।

हिंदी साहित्य में स्थान :- मैथिलीशरण गुप्त जी की राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका विशेष स्थान है। हिंदी काम राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा को बहाने का श्रेय गुप्तजी को ही हैं। अतः ये सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। इनके काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

राष्ट्रप्रेम गुप्त जी की कविता का प्रमुख स्वर है। भारत भारती में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश प्रेम ही इनकी पर्वती रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। उनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गांधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्य की कथावस्तु गुप्ता जी ने आज के जीवन से ना लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। यह अतीत की गौरव गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपना आते हैं।

renaissance

मृत्यु

मैथिलीशरण गुप्त जी पर गांधी जी का भी गहरा प्रभाव पड़ा था इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कारावास की यात्रा भी की थी। यह एक सच्चे राष्ट्र कवि भी थे। इनके काम हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। महान ग्रंथ **भारत भारती** में इन्होंने भारतीय लोगों की जाती और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जताई है। अंतिम काल तक राष्ट्र सेवा में अथवा काव्य साधना में लीन रहने वाले और राष्ट्र के प्रति अपनी रचनाओं को समर्पित करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 12 दिसंबर सन 1964 ईस्वी को अपने राष्ट्र को अलविदा कह गए।

मातृभूमि / मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?
पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?

renaissance

तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥
फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥
निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥
शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥
सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते है॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥
क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।
भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥

renaissance

उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।

होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥

Unit -2

विराम चिन्ह

विराम चिह्न की परिभाषा

विराम चिह्न वे संकेत होते हैं जिनका उपयोग लिखे गए वाक्यों में भाव, अर्थ और स्पष्टता को सही ढंग से प्रकट करने के लिए किया जाता है। ये चिह्न वाक्य में ठहराव, विराम, प्रश्न, विस्मय आदि को दर्शाते हैं, जिससे पाठक को पढ़ते समय सही लय और समझ मिलती है।

उदाहरण: पूर्ण विराम (।), प्रश्नवाचक चिह्न (?), अल्पविराम (,), उद्धरण चिह्न (" ") आदि।

1. पूर्ण विराम चिन्ह

पूर्ण विराम (।) Full Stop

पूर्ण विराम (।) वाक्य के पूर्णतः समाप्त होने का प्रतीक है। इसका प्रयोग उन वाक्यों के अंत में किया जाता है जहाँ विचार या भाव पूर्ण हो जाता है और आगे कहने के लिए कुछ नहीं बचता है। किसी बात के पूरी तरह से समाप्त होने पर इसका उपयोग किया जाता है।

- **पूर्ण विराम के उदहारण–**
  - "मैं दिल्ली में रहता हूँ।"
  - "दरवाजा बंद करो।"
  - "हम दिल्ली के वासी हैं।"

प्रश्नवाचक चिन्ह (?) Question mark

प्रश्नवाचक चिन्ह (?) भी एक विराम चिन्ह है, जिसका प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में किया जाता है। यह वाचक को यह समझने में मदद करता है कि वाक्य एक प्रश्न है और उत्तर की अपेक्षा है। कई बार इस चिन्ह के आभाव में वाक्य को समझना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

renaissance

- **प्रश्नवाचक चिन्ह के उदाहरण-**
    - “तुम्हारा नाम क्या है?”
    - “क्या तुम दिल्ली जा रहे हो?”
    - “क्या आप जानते हैं कि यह कैसे करना है?”

विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) Exclamation mark

विस्मयादिबोधक चिन्ह (!), जिसका उपयोग तीव्र भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जैसे कि आश्चर्य, विस्मय, खुशी, क्रोध, भय, आदि। इसे आप हैरान करने या चौंका देने वाले भाव को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि कोई बात आपको अचानक से हैरान कर दे, उस स्थान या वाक्य के साथ विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग किया जा सकता है।

- **विस्मयादिबोधक चिन्ह के उदाहरण-**
    - “वाह! यह तो बहुत सुंदर है!”
    - “क्या बात है! तुमने यह कैसे किया?”
    - “हाय! मुझे चोट लग गई!”

2. अल्प विराम चिन्ह | Viram Chinh ke naam

अल्प विराम चिन्ह (,) comma

यह चिन्ह (,) वाक्य के विभिन्न शब्दों, वाक्यांशों या अंशों को अलग करने के लिए प्रयोग होता है। यह वाक्य में थोड़ा ठहराव दर्शाता है और वाचक को वाक्य को सही ढंग से पढ़ने और समझने में मदद करता है। इससे 2 वाक्य को पूरा करने के लिए वाचक को एक ब्रेक मिलता है।

- **अल्प विराम चिन्ह के उदहारण-**
    - “मुझे फल, सब्जियां, और अनाज खरीदने हैं।”
    - “मैं दिल्ली में रहता हूँ, जहाँ मैंने अपनी शिक्षा प्राप्त की।”
    - “यह, मेरा मानना है, सबसे अच्छा तरीका है।”

renaissance

अर्धविराम चिन्ह (;) semicolon symbol

अर्धविराम (;), जिसका प्रयोग वाक्यों को जोड़ने या वाक्य के महत्वपूर्ण भागों को अलग करने के लिए किया जाता है। यह अल्प विराम (,) से अधिक मजबूत ठहराव और पूर्ण विराम (।) से कम मजबूत ठहराव दर्शाता है।

- **अर्धविराम चिन्ह के उदहारण-**
  - "वह बहुत थका हुआ था; इसलिए वह जल्दी सो गया।"
  - "वह दुकान पर गया, जहाँ उसने नई किताबें खरीदीं; फिर वह पार्क में गया, जहाँ वह किताबें पढ़ सकता था।"
  - "वह सफल होना चाहता था; हालाँकि, रास्ते में कई चुनौतियाँ थीं।"

उपविराम (:) – Colon Symbol

उपविराम का चिन्ह को अपूर्ण विराम के नाम से भी जाना जाता है। इसे कोलन भी कहा जाता है। इसका प्रयोग मुख्य तौर पर किसी सूची को बनाने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल संवाद, नाटक या शीर्षक के आगे भी किया जाता है।

- **उपविराम चिन्ह के उदाहरण-**
  - "शीषर्क- मां: ममता की मूरत"
  - "संवाद-दिनेश: मैंने तुमसे घर के अंदर रहने कहा था।"
  - "अमन: सुनो ये मेरी किताब नहीं है।"

निर्देशक चिह्न (—)

यह एक लंबा विराम चिह्न है जिसका उपयोग वाक्य में अचानक परिवर्तन या अतिरिक्त जानकारी जोड़ने के लिए किया जाता है।

- **निर्देशक चिह्न के उदाहरण-**
  - "मैं बाजार जा रहा था—लेकिन अचानक बारिश होने लगी।"

योजक चिन्ह (-) Hyphen Symbol

योजक चिन्ह (-) एक उपयोगी विराम चिन्ह है जो कई कामों के लिए इस्तेमाल होता है। इसका मुख्य उपयोग शब्दों, वाक्यांशों, या अंशों को जोड़ने के लिए किया जाता है। यह दो हिस्सों को मिलाकर एक

renaissance

शब्द बना सकता है या शब्दों के बीच एकता दिखा सकता है। योजक चिन्ह का उपयोग समान अर्थ वाले शब्दों या वाक्यांशों को जोड़ने में भी होता है, और कभी-कभी यह विपरीत या विरोधी शब्दों को भी जोड़ने का काम करता है। इसके प्रयोग से लेखन अधिक स्पष्ट और संगठित बनता है।

- **योजक चिन्हों के उदाहरण-**
    - "यह दुनिया अच्छे-बुरे का मिश्रण है।"
    - "लोग आते-जाते रहते हैं।"
    - "देना-लेना जीवन का हिस्सा है।"

3. अन्य विराम चिन्ह

- **उद्धरण चिह्न (" "):** उद्‌धृत उपयोग किसी व्यक्ति के कहे हुए शब्दों को दोहराने या किसी के कथन को ज्यों का त्यों बताने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: उसने कहा, "मैं आऊंगा।"
- **कोष्ठक (()):** इसका उपयोग अतिरिक्त जानकारी देने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: "वह (जो मेरे बचपन का मित्र है) अब डॉक्टर बन गया है।"
- **खष्ठक ([]):** इसका उपयोग संपादकीय नोट या अतिरिक्त जानकारी देने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: "वह [जो अपने समय का महान वैज्ञानिक था] आज भी याद किया जाता है।"
- **त्रुटि-चिह्न या विस्मरण चिन्ह (^):** इसका उपयोग पाठ में त्रुटि को दर्शाने या कुछ जोड़ने के लिए किया जाता है। यह हिन्दी लेखन में आम नहीं है।
- **पदलोप चिह्न (...):** इसका उपयोग वाक्य के अधूरेपन या विचार के टूटने को दर्शाने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: "मैं सोच रहा था कि... शायद मुझे वहां जाना चाहिए।"
- **तुल्यता सूचक चिह्न (=):** इसका उपयोग गणितीय समानता या तुल्यता को दर्शाने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: "2 + 2 = 4"
- **विभाजक चिह्न (/):** इसका उपयोग दो विकल्पों या विकल्पों को अलग करने के लिए किया जाता है।
    - उदाहरण: "हाँ/नहीं"

renaissance

- **पुनरुक्ति सूचक चिन्ह (,,):** इसका उपयोग शब्दों या वाक्यों की पुनरावृत्ति को दर्शाने के लिए किया जाता है।
- **लाघव चिन्ह (०):** इसका उपयोग अंकों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है।
  - उदाहरण: "2000 को 2००० लिखा जाता है।"
- **रेखांकन चिन्ह (_):** इसका उपयोग इंटरनेट पते, ईमेल पते आदि में खाली स्थान को दर्शाने के लिए किया जाता है।

इन सभी विराम चिह्नों का उचित उपयोग आपके लेखन को अधिक स्पष्ट, प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।

विराम चिन्ह के उदाहरण।

हिन्दी में विराम चिह्न का उपयोग वाक्यों और विचारों को स्पष्ट और सुसंगत रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। नीचे प्रत्येक विराम चिह्न का विस्तृत वर्णन दिया गया है:

क्रम	**विराम चिह्न का नाम**	**चिह्न**	**प्रयोग का विवरण**	**उदाहरण**
1	पूर्ण विराम	।	वाक्य समाप्त करने के लिए	वह स्कूल गया।
2	प्रश्नवाचक चिह्न	?	प्रश्न पूछने के लिए	तुम कहाँ जा रहे हो?

renaissance

क्रम	**विराम चिह्न का नाम**	**चिह्न**	**प्रयोग का विवरण**	**उदाहरण**
3	विस्मयादिबोधक चिह्न	!	आश्चर्य, क्रोध या भावना व्यक्त करने के लिए	वाह! कितना सुंदर दृश्य है!
4	अल्पविराम	,	वाक्य में छोटा विराम देने के लिए	राम, श्याम और मोहन आए।
5	अर्धविराम	;	दो स्वतंत्र वाक्यों को जोड़ने के लिए	वह पढ़ता है; वह अच्छा छात्र है।
6	कोष्ठक	( )	अतिरिक्त जानकारी देने के लिए	गांधीजी (1869–1948) नेता थे।
7	उद्धरण चिह्न	" "	किसी के कथन या विशेष शब्द को दिखाने के लिए	उसने कहा, "मैं आ रहा हूँ।"

renaissance

क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
8	एकल उद्धरण चिह्न	‘ ’	किसी शब्द पर बल देने के लिए	उन्होंने इसे ‘अद्वितीय’ कहा।
9	डैश	—	वाक्य में अलग बात या रुकावट दर्शाने के लिए	वह—जो कभी समय पर नहीं आता—आ गया।
10	हाइफन	–	दो शब्दों को जोड़ने के लिए	हिंदी–अंग्रेज़ी शब्दकोश
11	कोलन (द्विबिंदु)	:	सूची या उदाहरण से पहले	उसने यह खरीदा: किताबें, पेन, बैग।
12	अतिरिक्त विराम	…	अपूर्ण विचार या रुकावट दर्शाने के लिए	शायद वह… कभी न आए।
13	स्लैश	/	विकल्प या विभाजन	हाँ/नहीं, वह/वे

renaissance

क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
			दिखाने के लिए	
14	प्रत्यय चिह्न	~	लगभग या औसत बताने के लिए	~100 लोग उपस्थित थे।
15	ऋण चिह्न	–	ऋणात्मक संख्या के लिए	तापमान –10°C है।
16	अंडरस्कोर	_	टेक्स्ट में खाली स्थान या नामों में	Sahil_Sethi
17	तारांकित चिह्न	*	विशेष टिप्पणी या शर्त के लिए	यह योजना *कुछ नियमों के अधीन है।
18	नुक़्ता	़	ध्वनि को विशेष रूप देने के लिए	ज़िंदगी, फ़ल

renaissance

क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
19	संख्या चिह्न	#	नंबर या सोशल टैग के लिए	#शिक्षा_सर्वोपरि

विराम चिन्हों का सही उपयोग

विराम चिन्हों का सही उपयोग लेखन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह पाठ को पढ़ने में सरल और समझने में आसान बनाता है। सही विराम चिन्हों के उपयोग से लेखन स्पष्ट, सुसंगत और प्रभावशाली बनता है।

लेखन में सटीकता

लेखन में मुख्य रूप से विराम चिन्हों का उपयोग सटीकता लाने के लिए किया जाता है। इसका मतलब है कि विचारों, तथ्यों, और भाषा को स्पष्ट और सही तरीके से प्रस्तुत किया जाए। जब हम विराम चिन्हों का सही तरीके से प्रयोग करते हैं, तो पाठक को भ्रामक जानकारी से बचाया जा सकता है। इससे लेखन की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता भी बढ़ती है।

renaissance